''मीठे बच्चे – तुम्हारी चलन बहुत-बहुत मीठी रॉयल होनी चाहिए, क्रोध का भूत बिल्कुल न हो''

प्रश्नः- 21 जन्मों की प्रालब्ध पाने के लिए बच्चों को किस बात का ध्यान जरूर रखना है?

उत्तरः- इस दुनिया में रहते, सब कुछ करते, बुद्धि का योग एक सच्चे माशुक के साथ रहे। ऐसी कोई बुरी आदत न हो जिससे बाप की आबरू खत्म हो। घर में रहते भी इतना प्यार से रहो जो दूसरे समझें कि इसमें तो बहुत अच्छे दैवीगुण हैं।

गीतः- जाग सजनियाँ जाग...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) हम रॉयल बाप के बच्चे हैं इसलिए अपनी चलन बहुत रॉयल रखनी है। आवाज़ से नहीं बोलना है। बहुत मीठा बनना है।

2) कभी भी बाप से वा आपस में रूठना नहीं है। रूठकर पढ़ाई कभी नहीं छोड़नी है। जो भी बुरी आदतें हैं उन्हें छोड़ना है।

वरदानः- फुलस्टॉप द्वारा श्रेष्ठ स्थिति रूपी मैडल प्राप्त करने वाले महावीर भव

इस अनादि ड्रामा में रुहानी सेना के सेनानियों को कोई मैडल देता नहीं है लेकिन ड्रामानुसार उन्हें श्रेष्ठ स्थिति रूपी मैडल स्वत: प्राप्त हो जाता है। यह मैडल उन्हें ही प्राप्त होता है जो हर आत्मा का पार्ट साक्षी होकर देखते हुए फुलस्टॉप की मात्रा सहज लगा देते हैं। ऐसी आत्माओं का फाउण्डेशन अनुभव के आधार पर होता है इसलिए कोई भी समस्या रूपी दीवार उन्हें रोक नहीं सकती।

स्लोगनः- हर परिस्थिति रूपी पहाड़ को पार कर अपनी मंजिल को प्राप्त करने वाले उड़ता पंछी बनो।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

एक दो की बातों को स्वीकार करना और सत्कार देना, जब यह दोनों ही बातें आ जाती हैं तो फिर सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जाती है क्योंकि एक दो को सत्कार देना ही भविष्य का अधिकार लेना है।

''मीठे बच्चे – मैं तुम बच्चों के लिए हथेली पर बहिश्त लाया हूँ, तुम मुझे याद करो तो स्वर्ग की बादशाही मिल जायेगी''

प्रश्नः- बेहद की खुशी किन बच्चों को निरन्तर रह सकती है?

उत्तरः- जिन्होंने बेहद का सन्यास किया है और संग तोड़ एक संग जोड़ा है, वही निरन्तर खुशी में रह सकते हैं। 2- जो फॉलो फादर करते हैं, जिन्हें सर्विस का शौक है उनकी खुशी कभी गायब हो नहीं सकती।

गीतः- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) जो अच्छी रीति श्रीमत पर चलते हैं, उन्हें फॉलो करना है। बेहद की खुशी में रहने के लिए आप समान बनाने की सेवा करनी है।

2) प्रीत बुद्धि बन और संग तोड़ एक बाप से जोड़ना है। डबल अहिंसक बन साइलेन्स में बैठ अपनी राजाई स्थापन करनी है।

वरदानः- त्याग और तपस्या द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

सेवा में सफलता का मुख्य साधन है त्याग और तपस्या। त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प से भी त्याग, किसी परिस्थिति के कारण, मर्यादा के कारण, मजबूरी से त्याग करना यह त्याग नहीं है लेकिन ज्ञान स्वरूप से, संकल्प से भी त्यागी बनो और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, ज्ञान, प्रेम, आनंद, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए। ऐसे त्यागी, तपस्वी ही सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सच्चे सेवाधारी हैं।

स्लोगनः- अपनी तपस्या द्वारा शान्ति के वायब्रेशन फैलाना ही विश्व सेवाधारी बनना है।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

आप सम्पूर्ण आत्माओं का अन्तिम वाहन है – कर्मबन्धन मुक्त, कर्मातीत स्थिति। ऐसी स्थिति बनाने के लिए ब्रह्मा बाप समान सर्व हदों पर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो, तब अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी बनेंगे। अनेक प्रकार की हदें अर्थात् अनेक मेरा मेरा। जब मैं और मेरा, तू और तेरा... यह चार शब्द एक बाबा शब्द में समा जायेंगे तब सम्पूर्णता समीप आयेगी।

''मीठे बच्चे – तुम्हें मन्सा-वाचा-कर्मणा एक्यूरेट बनना है, क्योंकि तुम देवताओं से भी ऊंच ब्राह्मण चोटी हो''

प्रश्नः- सबसे गुप्त और महीन बात कौन-सी है जो बच्चे भी मुश्किल ही समझ सकते हैं?

उत्तरः- शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का भेद समझना – यह सबसे गुप्त और महीन बात है। इसमें कई बच्चे मूँझ जाते हैं। यह राज़ स्वयं बाप बतलाते हैं कि मैं सवेरे-सवेरे इस तन द्वारा तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ, बाकी ऐसे नहीं कि मैं कोई सारा दिन इन पर सवारी करता हूँ।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सदा इसी स्मृति में रहना है कि हम ब्राह्मण हैं। हम ब्राह्मणों को ही भगवान पढ़ाते हैं। हम अभी ब्राह्मण सो देवता बन रहे हैं।

2) ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरकर दान करना है। इस कलियुगी पतित दुनिया का किनारा छोड़ देना है। माया के तूफानों से डरना नहीं है।

वरदानः- बर्थ राईट के नशे द्वारा लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले श्रेष्ठ तकदीरवान भव

जैसे लौकिक जन्म में स्थूल सम्पत्ति बर्थ राईट होती है, वैसे ब्राह्मण जन्म में दिव्यगुण रूपी सम्पत्ति, ईश्वरीय सुख और शक्ति बर्थ राईट है। बर्थ राईट का नशा नेचुरल रूप में रहे तो मेहनत करने की आवश्यकता नहीं। इस नशे में रहने से लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे। स्वयं को जो हूँ, जैसा हूँ, जिस श्रेष्ठ बाप और परिवार का हूँ वैसा जानते और मानते हुए श्रेष्ठ तकदीरवान बनो।

स्लोगनः- हर कर्म स्व स्थिति में स्थित होकर करो तो सहज ही सफलता के सितारे बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

एक सेकेण्ड में आवाज में आओ और एक सेकेण्ड में आवाज़ से परे हो जाओ, अभी-अभी आवाज में, अभी-अभी आवाज़ से परे.. जब यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा तब समझो सम्पूर्णता समीप है। अभी आपकी हर कर्मेन्द्रिय ''जी हजूर'' ''जी हाज़िर'' करती हुई चले। ऐसे जब आप राज्य अधिकारियों का यह कर्मेन्द्रियाँ स्वागत अर्थात् सलाम करेंगी तब सम्पन्न व सम्पूर्ण कर्मातीत बन सकेंगे।

''मीठे बच्चे – अन्दर बाहर साफ बनो, कोई भी गन्दी आदत अब तुम्हारे में नहीं होनी चाहिए''

प्रश्नः- ब्राह्मण बच्चों को बाप से पूरा-पूरा वर्सा लेने के लिए किन-किन धारणाओं पर ध्यान रखना है?

उत्तरः- 1- इस जन्म में बाप का बनकर ऐसा कोई पाप कर्म न हो जिसकी सौ गुणा सजा भोगनी पड़े। 2- बाप जो अति मीठा है वह तुम्हें आप समान मीठा बनाते हैं इसलिए मुख से कोई कड़ुवा बोल न निकले जिससे दूसरे को दु:ख हो। 3- दु:ख हर्ता सुख कर्ता के बच्चे बन सबके दु:ख हरने हैं। मन्सा-वाचा-कर्मणा सुख देना है। 4- स्तुति-निंदा में समान रहना है।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) अभी कयामत का समय है इसलिए कोई भी पाप कर्म नहीं करना है। अपने कल्याण का पुरुषार्थ करना है, बहुत मीठा बनना है। क्रोध को छोड़ देना है।

2) बाप से पूरा-पूरा वर्सा लेने की तमन्ना रखनी है। कदम-कदम पर बाप की राय लेनी है। बाप समान दु:ख हर्ता सुख कर्ता बनना है।

वरदान:- अपने भाग्य और भाग्यविधाता की स्मृति द्वारा सर्व उलझनों से मुक्त रहने वाले मास्टर रचयिता भव

सदा वाह मेरा भाग्य और वाह भाग्य विधाता! इस मन के सूक्ष्म आवाज़ को सुनते रहो और खुशी में नाचते रहो। जानना था वो जान लिया, पाना था वो पा लिया – इसी अनुभवों में रहो तो सर्व उलझनों से मुक्त हो जायेंगे। अब उलझी हुई आत्माओं को निकालने का समय है इसलिए मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, मास्टर रचयिता हूँ – इस स्मृति से बचपन की छोटी-छोटी बातों में समय नहीं गँवाओ।

स्लोगन:- कमल आसनधारी ही माया की आकर्षण से न्यारे, बाप के स्नेह में प्यारे श्रेष्ठ कर्मयोगी हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

पुरुषार्थ में सरलता, ब्रह्मा बाप समान उपराम और साक्षीदृष्टा के संस्कार, यही सम्पूर्ण स्टेज की निशानी व लक्षण हैं। तो अब इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे, जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।

''मीठे बच्चे – सर्विस के साथ-साथ याद की यात्रा को भी कायम रखना है, इस रुहानी यात्रा में कभी ठण्डे नहीं होना''

प्रश्नः- बच्चों की दिल अगर रुहानी सर्विस में नहीं लगती तो उसका कारण क्या है?

उत्तरः- अगर रुहानी सर्विस में दिल न लगे तो जरूर देह-अभिमान की ग्रहचारी है। चलते-चलते देह अभिमान के कारण जब आपस में रूठ पड़ते हैं तो सर्विस ही छोड़ देते हैं। एक दो की शक्ल देखते ही सर्विस के ख्याल उड़ जाते हैं इसलिए बाबा कहते इस ग्रहचारी से सम्भाल करो।

गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) भगवान की आज्ञाओं की अवज्ञा कभी नहीं करनी है। बेहद सेवा में सपूत बच्चा बन मददगार बनना है।
2) ज्ञान धन की गुप्त खुशी से बुद्धि को भरपूर रखना है। आपस में कभी भी रूठना नहीं है।

वरदानः- हर कदम फरमान पर चलकर माया को कुर्बान कराने वाले सहजयोगी भव

जो बच्चे हर कदम फरमान पर चलते हैं उनके आगे सारी विश्व कुर्बान जाती है, साथ-साथ माया भी अपने वंश सहित कुर्बान हो जाती है। पहले आप बाप पर कुर्बान हो जाओ तो माया आप पर कुर्बान जायेगी और अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहते हुए हर फरमान पर चलते रहो तो जन्म-जन्मान्तर की मुश्किल से छूट जायेंगे। अभी सहजयोगी और भविष्य में सहज जीवन होगी। तो ऐसी सहज जीवन बनाओ।

स्लोगनः- स्वयं के परिवर्तन से अन्य आत्माओं का परिवर्तन करना ही जीयदान देना है।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

संकल्प किया और जिस स्थिति में स्थित होना चाहें उसमें स्थित हो जायें, यही है बाप समान सम्पूर्ण अवस्था वा कर्मातीत अन्तिम स्टेज। जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप के नजदीक होंगे, उसी अनुसार भविष्य प्रालब्ध में भी राज अधिकारी होंगे। जितना नशा होगा उतना अपना कर्मातीत अवस्था का निशाना नजदीक दिखाई देगा।

''मीठे बच्चे – विचार सागर मंथन कर सर्विस की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ निकालो, जिससे सबको बाप का परिचय मिल जाए''

प्रश्नः- बाप हर एक बच्चे को ऊंच तकदीर बनाने की युक्ति कौन-सी बताते हैं?

उत्तरः- अपनी ऊंच तकदीर बनानी है तो अन्दर से सब छी-छी बुरी आदतें निकाल दो। झूठ बोलना, गुस्सा करना यह बहुत खराब आदतें हैं। सर्विस का शौक रखो। जैसे बाप निरहंकारी बन सेवा करते हैं। ऐसे जितना हो सके औरों के कल्याण अर्थ रुहानी सेवा में बिजी रहो।

गीतः- मरना तेरी गली में...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) कोई भी काम कायदे के विरुद्ध नहीं करना है। बहुत-बहुत निरहंकारी, निर्मोही रहना है। जितना हो सके हर कार्य अपने हाथों से करना है। यज्ञ की सर्विस बहुत खुशी से करनी है।

2) पढ़ाई में कभी बहाना नहीं देना है। बीमारी में भी पढ़ना जरूर है। हुल्लास में रहने के लिए सर्विस का शौक रखना है।

वरदानः- सदा स्वमान में स्थित रह निर्माण स्थिति द्वारा सर्व को सम्मान देने वाले माननीय, पूज्यनीय भव

जो बाप की महिमा है वही आपका स्वमान है, स्वमान में स्थित रहो तो निर्माण बन जायेंगे, फिर सर्व द्वारा स्वत: ही मान मिलता रहेगा। मान माँगने से नहीं मिलता लेकिन सम्मान देने से, स्वमान में स्थित होने से, मान का त्याग करने से सर्व के माननीय वा पूज्यनीय बनने का भाग्य प्राप्त हो जाता है क्योंकि सम्मान देना, देना नहीं लेना है।

स्लोगनः- जाननहार के साथ करनहार बन असमर्थ आत्माओं को अनुभूति का प्रसाद बांटते चलो।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

किसी भी प्रकार का देह का, सम्बन्ध का, वैभवों का बन्धन अपनी ओर आकर्षित न करे, ऐसी स्वतन्त्र आत्मा ही बाप-समान कर्मातीत स्थिति वा सम्पन्न स्थिति का अनुभव करती है। इसके लिए प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। कोई भी कर्म अपने बंधन में बांध न ले।

''मेरे को तेरे में परिवर्तन कर बेफिक्र बादशाह बनो, बाप की मोहब्बत और सेवा में मन को इतना बिजी कर दो जो व्यर्थ आने की मार्जिन न रहे''

- आज बापदादा चारों ओर के अपने बेफिक्र बादशाहों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सवेरे से उठ बेफिक्र स्थिति में स्थित हो हर कर्म करता है। आप सभी ने बाप को फिक्र देकरके फखुर ले लिया है। दिन-रात कोई भी बात का फिक्र नहीं लेकिन फखुर है।
- यह बेफिक्र जीवन की विधि बहुत सहज है – जो भी हद का मेरा-मेरा है उसको तेरा कर दिया। मेरे को तेरा करने से जीवन कितनी खुशनुमा बन जाती है।
- फिकर वाली जीवन का आधार है व्यर्थ संकल्प। बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा व्यर्थ को मेरे के बदले तेरा कर दे। बाप आपेही भस्म कर देंगे।
- आप सभी को विश्व के आगे दु:खी आत्माओं को पावरफुल वृत्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें देनी हैं। इसी में ही अपना मन बिजी रखना है।
- दो बातों का ध्यान रखना है एक तो संकल्प, दूसरा समय। इस संगम का समय एक-एक मिनट का कनेक्शन 21 जन्म के साथ है। समय और संकल्प को सफल करना ही है। व्यर्थ नहीं जाये।

वरदान:- सेवा की स्टेज पर समाने की शक्ति द्वारा सफलता मूर्त बनने वाले मास्टर सागर भव

जब सेवा की स्टेज पर आते हो तो अनेक प्रकार की बातें सामने आती हैं, उन बातों को स्वयं में समा लो तो सफलतामूर्त बन जायेंगे। समाना अर्थात् संकल्प रूप में भी किसी की व्यक्त बातों और भाव का आंशिक रूप समाया हुआ न हो। अकल्याणकारी बोल कल्याण की भावना में ऐसे बदल दो जैसे अकल्याण का बोल था ही नहीं। अवगुण को गुण में, निंदा को स्तुति में बदल दो – तब कहेंगे मास्टर सागर।

स्लोगन:- विस्तार को न देख सार को देखने वा स्वयं में समाने वाले ही तीव्र पुरुषार्थी हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचता समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में सेकेण्ड में स्थित हो जाओ। जब सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे तब कर्मातीत अर्थातृ सम्पन्न स्थिति का अनुभव होगा।